सरोवर

(रूपमाला छंद)

बालपन में देखते थे मैं न अब वह ताल,
मत बुनो स्वर्णिम विगत के मृषा सुस्मृति जाल ।
तरंगायित सिंधु सा जो वृष्टि के उपरान्त,
आज तनुजल उष्ण धरता सतह जिसकी शान्त ।। 1 ।।

दीखते थे लघु युवा नर कभी तट के पार,
बाल क्षेपित उपल भी गिरता न अब मझधार।
द्वीपवत जो भासता था कभी तुमको ग्राम,
ग्रामदेवी हारवत मैं ले रहा विश्राम ।। 2 ।।

कभी परिखा वत बनाता दुर्ग सम तव ग्राम,
आज खंडित वपु निराश्रय विपुल जलचर ग्राम ।
कभी तट पर थे विचरते धेनु के समुदाय,
आज शूकर दीर्ण करते शेष मम लघुकाय ।। 3 ।।

व्योमचारी हित कभी था मैं विमल आदर्श
श्वास लेने हेतु शफरीं कर रहीं संघर्ष
स्तोक निज तनिमा बनाती हृदय को सविषाद
विषम आश्रय दान अक्षमता जनित परिवाद ।। 4 ।।

शिशिर में मुझसे मिला करता समुत्सुक कंद
सघनतर नीहार करता रविप्रभा को मंद
दीखता केवल रजक शीतापकृतपदक्षेप
मात्र उद्धत मीन करतीं शांत जल विक्षेप ।। 5 ।।

वरूण वर सा था समुर्मिल गहन ज्यों उपसिंधु
आज भूतल पर पड़ा ज्यों अश्रु के कुछ बिंदु
मूर्ति भी मुझमें विसर्जन को न उत्सुक मित्र
नित्य रस शोषण निरत हैं कुपित से हो मित्र ।। 6 ।।

खेलते जिस पर कभी थे तुम लपेटे धूल
बहुत आगे बढ़ गया है आज वह मृदुकूल
बहुत पीछे रह गए हैं शेष जो सहकार
अब न करते तट सुगंधित मंजरी संभार ।। 7 ।।

अब न हिमगिरि पार से आते विपुल खगवृंद
गूंजता है बस टिटहरी का विकल आक्रंद
अब न पाओगे यहां वारिज विकच आरक्त
न ही कैरविणी करेगी नयन तव आसक्त ।। 8 ।।

श्वेत स्वर्णिम असित वर्णी कहां गोचर हंस
वृद्धि किंचित पा रहा है विविध छवि वकवंश
विरल ही हैं दीखते कुछ मौन सारस युग्म
नृत्य अब सहचारिणी परितः न ग्रीवा भुग्न ।। 9 ।।

अब सिंघाड़े की हरित श्यामल न फैली बेल
मात्र जलकुम्भी करेगी दृष्टि पथ से मेल
घन्नई आरूढ़ गायनरत न हृष्ट कहार
आ गया अति निकट देखो ग्राम के अब हार ।। 10 ।।

प्रकृत था संकोच फिर विस्तार ऋतु अनुसार
आज तनुवसुता बनी है नित्य का व्यवहार
यदपि कुछ गंभीर पर सीमित तटों के बीच
सकल निधि करते मुषित नर जाल बहुधा खींच ।। 11 ।।

सौरि रोहू मोर कतला गेड बहु पाठीन
अब विगत हैं मात्र मिलतीं बीज कृत कुछ मीन
बालपन में ही सुतावत सकल शफरी वर्ग
जलजनक अपहृत विवश असु का करें उत्सर्ग ।। 12 ।।

व्यर्थ है जल कुक्कुटों के शावकों की खोज
लीन वर्षों पूर्व कैरव जाल और सरोज
अब न बालक बीनते हैं यहां सीपी शंख
ध्यान फल विरहित हुआ कृशकाय देखो कंक ।। 13 ।।

मम गहनता हेतु बहुशः हो चुके उद्योग
सुना जाता है प्रचुर धन का हुआ विनियोग
गहनता मेरी विवर्धित हुई किंचित मात्र
किंतु उथले हो गए हैं मनुज के निधि पात्र ।। 14 ।।

मैं हुआ तनुवसु विपुलवसु हो गए कुछ व्यक्ति
हेम में ही आज दिखती मनुज की आसक्ति
उपेक्षित वह वसु तृषा का जो करे अपहार
काम्य वह वसु जो बढ़ाता तृषा का व्यापार ।। 15 ।।

मनुज करुणावत हुआ मम देह का संकोच
शस्यवसुकामी करेगा कौन मम मृति शोक
किसे रहते याद परकृत अमित भी उपकार
वाक का व्यवहार बनता व्यक्त भी आभार ।। 16 ।।

पचाता संतत रहा अपशिष्ट के समुदाय
किंतु अब निर्बल हुई है यह विषातुर काय
मत मुझे मानो निपट जलराशि जीवन हीन
हैं हमारे समाश्रय में विविध जलचर मीन ।। 17 ।।

अनगिनत खग और पशुगण का तृषा अपहार
अब न मुझसे हो सकेगा, चित्त पर यह भार
कर सकूंगा नहीं अर्पित वारि कर्दम युक्त
जीव पीड़ाजनक हो जाए न, हो उपभुक्त ।। 18 ।।

मत उठाओ शीश नभ में हे भवन समुदाय
मात्र मेरी मृत्तिका से तुम सुदृढ़ धृतकाय
भूलता जो भी शिखर निज गह्वरी उद्भूति
नहीं चिरता प्राप्त कर सकती तदीया भूति ।। 19 ।।

आज मम वपु खा रहे अनवरत बढ़ते खेत
कहीं भावी पीढ़ियां उड़ती न देखें रेत
मम सरसता हो रही जिस विधि यहां अतिक्रांत
विरसता विस्तार भू को करेगा परिश्रांत ।। 20 ।।

ले न ले वापिस विमल रस संपदा यह व्योम,
जिसे लाए थे धरा पर ऋषिकृताध्वर होम
भूतभूतिप्रयोज्य निधि दूषण चले दुर्वार
तो सदा प्रतिसंहरण का नाथ को अधिकार ।। 21 ।।

मैं बनूं पोखर विगंधित अल्पधृत थिर नीर
पूर्व इसके देख जाना तुम मुझे मति धीर
शयन मैं अथवा करूंगा ओढ़ काई वस्त्र
मनुज कृत आस्कंद प्रतिमुख मैं निपट निःशस्त्र ।। 22।।

आ गया हूँ पुत्रवत सुनकर तुम्हारी आह,
रोक दूँगा पूर्णतः तव संकुचन की राह।
जगाऊंगा मनुज उर में पूत निस्पृह भाव,
अब निवारण योग्य सद्यः कनक द्युति भटकाव ।। 23 ।।

शांत रसमय विरज उज्ज्वल हृत जगत उत्ताप
क्षमा भूषण सहय जिसको मनुज कृत बहु पाप
नित्य मर्यादित समाश्रय योग्य मृदु गंभीर
सविषधारणशक्ति यतिवत भासते सर धीर ।। 24 ।।

गरल उत्थापक उदधि तुम गरल पाचक वंद्य
शिव सदृश शंकर तुम्हारा चरित है अभिनंद्य
यह धरा वसुधा, वसुधि तुम, यह क्षमा शममूर्ति
भूतधात्री है, यतः तुमसे सतत रस पूर्ति ।। 25 ।।

पुनः धारो तरुणता तुम वरुण करुणा बिंदु
मृदुलता सविशेष तुमसे हारता है सिंधु
अरुणसारथिकिरणदीपित वीचि का विस्तार
पवन प्रेरित जल अनाविल करे जग उपकार ।। 26 ।।

दिनांक 24. 06. 2014

शिव कुमार मिश्रा